Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
May 2024 5(5), 1606–1614

MORADABAD GHARANA: ORIGIN, EVOLUTION AND CULTURAL LEGACY IN HINDUSTANI CLASSICAL MUSIC

मुरादाबाद घराना: उत्पत्ति, विकास और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में सांस्कृतिक विरासत

Mandeep Kaur [1], Sharanjit Kaur Parmar [2]

[1] Research Scholar, S.Z.S. Government College, Raikot, Talwandi Road, Punjab University, Chandigarh, India
[2] Principal, S.Z.S. Government College, Raikot, Talwandi Road, Punjab University, Chandigarh, India

ABSTRACT

English: The Moradabad Gharana represents an important but less studied tradition in the broad spectrum of Hindustani classical music. This paper examines the historical origins, developmental process and cultural contributions of the Moradabad musical tradition, following its evolution from the early 17th century to contemporary manifestations. Through a comprehensive analysis of historical sources, genealogical records and musical characteristics, this study shows how the Moradabad Gharana emerged as a distinctive musical lineage, and eventually contributed to the establishment of the famous Bhendi Bazaar Gharana in Mumbai. The research methodology includes archival research, analysis of musical recordings, and examination of the socio-political factors that influenced the migration patterns of the gharana. The main findings indicate that the Moradabad tradition, while rooted in the cultural milieu of Mughal-era North India, continued to display remarkable adaptability and innovation, particularly in sarangi playing and khyal singing. The research paper concludes that despite geographical displacement and changing patronage systems, the musical legacy of the Moradabad gharana continues to influence contemporary Hindustani classical music, particularly through its emphasis on vocal ornamentation and rhythmic sophistication.

Hindi: मुरादाबाद घराना हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के व्यापक स्पेक्ट्रम में एक महत्वपूर्ण परंतु कम अध्ययनित परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है। यह शोध पत्र मुरादाबाद संगीत परंपरा की ऐतिहासिक उत्पत्ति, विकासात्मक प्रक्रिया और सांस्कृतिक योगदान की परीक्षा करता है, इसके विकास को 17वीं शताब्दी की शुरुआत से लेकर समकालीन अभिव्यक्तियों तक का अनुसरण करते हुए। ऐतिहासिक स्रोतों, वंशावली अभिलेखों और संगीत विशेषताओं के व्यापक विश्लेषण के माध्यम से, यह अध्ययन दर्शाता है कि कैसे मुरादाबाद घराना एक विशिष्ट संगीत वंश के रूप में उभरा, और अंततः मुंबई में प्रसिद्ध भिंडी बाज़ार घराने की स्थापना में योगदान दिया। अनुसंधान पद्धति में अभिलेखीय अनुसंधान, संगीत रिकॉर्डिंग का विश्लेषण और उन सामाजिक-राजनीतिक कारकों की जांच शामिल है जिन्होंने घराने के प्रवासन पैटर्न को प्रभावित किया। मुख्य निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि मुरादाबाद परंपरा, मुगल-युगीन उत्तर भारत के सांस्कृतिक माहौल में निहित होते हुए भी, उल्लेखनीय अनुकूलनशीलता और नवाचार प्रदर्शित करती रही, विशेष रूप से सारंगी वादन और ख्याल गायन में। शोध पत्र इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि भौगोलिक विस्थापन और बदलते संरक्षण प्रणालियों के बावजूद, मुरादाबाद घराने की संगीत विरासत समकालीन हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को प्रभावित करती रहती है, विशेष रूप से स्वर अलंकरण और लयबद्ध परिष्कार पर जोर के माध्यम से।

Keywords: Moradabad Gharana, Hindustani Classical Music, Bhendi Bazaar Gharana, Musical Lineage, Cultural Migration मुरादाबाद घराना, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, भिंडी बाज़ार घराना, संगीत वंश, सांस्कृतिक प्रवासन

Corresponding Author

Mandeep Kaur, eellimanu8@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.5779

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

घराना (संगीत घर या पारिवारिक परंपरा) की अवधारणा हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सबसे विशिष्ट विशेषताओं में से एक का प्रतिनिधित्व करती है, जो केवल संगीत प्रदर्शन के तकनीकी दृष्टिकोण को नहीं बल्कि पूरे दार्शनिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को मूर्त रूप देती है जो पीढ़ियों से स्थानांतरित होते रहे हैं। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के परिदृश्य को आकार देने वाले अनेक घरानों में से, मुरादाबाद घराना एक अनूठी स्थिति रखता है, जो एक विशिष्ट संगीत परंपरा और अन्य प्रमुख घरानों पर मूलभूत प्रभाव दोनों के रूप में कार्य करता है।

मुरादाबाद, रामगंगा नदी के तट पर पश्चिमी उत्तर प्रदेश में रणनीतिक रूप से स्थित एक शहर, मुगल काल के दौरान एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभरा। शहर की संगीत विरासत सांस्कृतिक संश्लेषण के व्यापक पैटर्न को दर्शाती है जो मुगल युग की विशेषता थी, जहां फारसी, मध्य एशियाई और स्वदेशी भारतीय संगीत तत्व मिलकर कलात्मक अभिव्यक्ति के नए रूप बनाते थे।

मुरादाबाद घराने के अध्ययन का महत्व केवल ऐतिहासिक प्रलेखन से कहीं अधिक है। यह संगीत संचरण के तंत्र, कलात्मक परंपराओं पर सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों के प्रभाव, और जटिल प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जिनके माध्यम से स्थानीय संगीत प्रथाएं शास्त्रीय संगीत के मान्यता प्राप्त स्कूलों में विकसित होती हैं। इसके अलावा, मुरादाबाद परंपरा का अंततः भेंडी बाज़ार घराने में रूपांतरण संगीत परंपराओं की गतिशील प्रकृति और बदलते सामाजिक-आर्थिक संदर्भों में उनकी अनुकूलन क्षमता को दर्शाता है।

यह शहर, जो 1600 में मुगल सम्राट शाहजहां के पुत्र मुराद द्वारा स्थापित किया गया था, मुगल दरबारी संस्कृति और स्थानीय सांस्कृतिक परंपराओं के मिलन का एक आदर्श उदाहरण बना। संगीत, जो मुगल संरक्षण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था, मुरादाबाद में एक विशिष्ट पहचान विकसित करने में सफल रहा जो आने वाली शताब्दियों में हिंदुस्तानी संगीत की मुख्यधारा को प्रभावित करती रही।

2. शोध पद्धति

इस अध्ययन में मिश्रित अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है जिसमें गुणात्मक और ऐतिहासिक अनुसंधान के तत्व शामिल हैं। प्राथमिक स्रोतों में मुगल कालीन फारसी और उर्दू पांडुलिपियां, 19वीं और 20वीं शताब्दी के संगीत विद्वानों के लेखन, और घराने के वंशज कलाकारों के मौखिक साक्षात्कार शामिल हैं। द्वितीयक स्रोतों में समकालीन संगीतविदों के शोध पत्र, संगीत रिकॉर्डिंग का विश्लेषण, और सामाजिक-राजनीतिक इतिहास के अध्ययन शामिल हैं।

डेटा संग्रह की प्रक्रिया में निम्नलिखित चरण शामिल थे:

1) अभिलेखीय अनुसंधान: राष्ट्रीय अभिलेखागार, उत्तर प्रदेश राज्य अभिलेखागार, और निजी संग्रहों से ऐतिहासिक दस्तावेजों का संकलन
2) मौखिक इतिहास संग्रह: घराने के वंशज संगीतकारों और विद्वानों के साथ संरचित साक्षात्कार
3) संगीत विश्लेषण: ऐतिहासिक रिकॉर्डिंग और समकालीन प्रदर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन
4) वंशावली मानचित्रण: घराने के प्रमुख कलाकारों और उनकी शिष्य परंपरा का चार्टिंग

3. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

3.1. मुगल काल में मुरादाबाद (1600-1700)

मुरादाबाद की स्थापना 1600 में शहजादे मुराद द्वारा की गई थी, जो शाहजहां के सबसे प्रिय पुत्रों में से एक था। शहर की भौगोलिक स्थिति रामगंगा नदी के तट पर, दिल्ली और लखनऊ के बीच एक महत्वपूर्ण व्यापारिक और सांस्कृतिक मार्ग पर थी। यह स्थान न केवल आर्थिक गतिविधियों के लिए बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए भी आदर्श था।

मुगल दरबार में संगीत की स्थापित परंपरा के अनुसार, मुरादाबाद में भी दरबारी संगीत की एक समृद्ध परंपरा विकसित हुई। शाहजहां के शासनकाल के दौरान, जब संगीत और कलाओं को व्यापक संरक्षण प्राप्त था, मुरादाबाद में भी कई प्रतिभाशाली संगीतकार आकर्षित हुए।

प्रारंभिक मुरादाबाद घराने की विशेषताओं में फारसी और भारतीय संगीत परंपराओं का अनूठा मिश्रण था। ध्रुवपद के साथ-साथ फारसी गजल और कव्वाली की परंपराएं यहां पनपीं। इस काल के संगीतकारों ने न केवल पारंपरिक रागों का अभ्यास किया बल्कि नए रागों और तालों का भी विकास किया।

3.2. 18वीं शताब्दी: संक्रमण काल

18वीं शताब्दी मुगल साम्राज्य के पतन और स्थानीय नवाबी राज्यों के उदय का काल था। मुरादाबाद भी इन राजनीतिक उथल-पुथल से अछूता नहीं रहा। हालांकि, यह काल मुरादाबाद घराने के लिए कलात्मक परिपक्वता का काल भी था।

इस काल में घराने के संगीतकारों ने अपनी विशिष्ट शैली विकसित की जो निम्नलिखित विशेषताओं से चिह्नित थी:

- ख्याल गायन में भावनात्मक गहराई पर जोर
- सारंगी वादन की परिष्कृत तकनीक
- तालों के साथ नवाचार और प्रयोग
- स्वर अलंकरण में सूक्ष्मता

रोहिल्ला काल (1740-1774) के दौरान, जब रोहिल्ला सरदारों ने इस क्षेत्र पर शासन किया, मुरादाबाद के संगीतकारों को नया संरक्षण मिला। रोहिल्ला दरबार में अफगान और भारतीय संगीत परंपराओं का संगम हुआ, जिसने मुरादाबाद घराने की संगीत शैली को और भी समृद्ध बनाया।

3.3. ब्रिटिश काल: चुनौतियां और अनुकूलन (1800-1947)

ब्रिटिश शासन की स्थापना के साथ पारंपरिक संरक्षण प्रणाली में गिरावट आई। दरबारी संस्कृति के पतन के साथ, कई संगीतकार परिवारों को नई आजीविका की तलाश करनी पड़ी। यह काल मुरादाबाद घराने के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

इस चुनौतीपूर्ण समय में, घराने के कलाकारों ने निम्नलिखित रणनीतियां अपनाईं:

1) शिक्षण को व्यवसाय के रूप में अपनाना
2) सांस्कृतिक केंद्रों में प्रवास
3) नई संरक्षण प्रणालियों की खोज
4) सामुदायिक प्रदर्शनों में भागीदारी

19वीं शताब्दी के मध्य तक, मुरादाबाद के कई प्रतिभाशाली संगीतकार लखनऊ, दिल्ली, और अन्य सांस्कृतिक केंद्रों में चले गए। यह प्रवास घराने के प्रसार का कारण बना, लेकिन साथ ही स्थानीय परंपरा के कमजोर होने का भी कारण बना।

4. घराने की संगीत विशेषताएं

4.1. गायन शैली

मुरादाबा॰ घराने की गायन शैली की मुख्य विशेषताओं में निम्नलिखित तत्व शामिल हैं:

स्वर संचार: घराने के गायकों की पहली विशेषता उनका अत्यंत नियंत्रित और भावपूर्ण स्वर संचार था। वे छोटे और बड़े दोनों प्रकार के स्वर अंतरालों को समान कुशलता से निभाते थे।

अलंकरण तकनीक : मुरादाबाद घराने के कलाकार अपने सूक्ष्म अलंकरण के लिए प्रसिद्ध थे। वे मीड़, खटका, मुर्की आदि का प्रयोग बहुत संयम और कलात्मकता के साथ करते थे।

भाव प्रदर्शन: घराने की एक अनूठी विशेषता यह थी कि इसके कलाकार तकनीकी प्रवीणता के साथ-साथ भावनात्मक गहराई को भी महत्व देते थे। वे प्रत्येक राग के मूल भाव को पकड़ने में सिद्धहस्त थे।

लय संचालन: तालों के साथ खेलना और जटिल लयकारी करना इस घराने की विशेषता थी। वे ताल के मात्राओं को विभिन्न प्रकार से विभाजित करके अनूठे प्रभाव पैदा करते थे।

4.2. सारंगी वादन परंपरा

मुरादाबाद घराना विशेष रूप से अपनी सारंगी वादन परंपरा के लिए प्रसिद्ध था। सारंगी, जो मुख्यतः संगति वाद्य के रूप में प्रयोग होता था, मुरादाबाद घराने में एक स्वतंत्र एकल वाद्य के रूप में विकसित हुआ।

तकनीकी नवाचार: घराने के सारंगी वादकों ने इस वाद्य की तकनीकी संभावनाओं का विस्तार किया। उन्होंने नए बोल पैटर्न विकसित किए और वाद्य की स्वर सीमा का अधिकतम उपयोग किया।

मीड़ तकनीक: सारंगी में मीड़ (स्वर सरकाव) की कला मुरादाबाद घराने की विशेषता थी। वे इस तकनीक का प्रयोग करके मानव स्वर के समान प्रभाव पैदा करते थे।

संगति कौशल: गायन के साथ सारंगी संगति में मुरादाबाद घराने के कलाकार अद्वितीय थे। वे गायक के भावों को समझकर उसके अनुकूल संगति प्रदान करते थे।

4.3. रागदारी और संरचना

मुरादाबाद घराने के कलाकारों का रागों के प्रति दृष्टिकोण अत्यंत परिष्कृत था। वे पारंपरिक रागों के साथ-साथ नए रागों के प्रयोग में भी अग्रणी थे।

राग विस्तार: घराने के कलाकार रागों का विस्तार करने में बहुत धैर्य रखते थे। वे आलाप में काफी समय लगाते थे और राग की प्रत्येक सूक्ष्मता को प्रस्तुत करते थे।

राग मिश्रण: कुछ विशेष अवसरों पर, वे दो या अधिक रागों का कुशल मिश्रण भी करते थे, जो उनकी गहरी संगीत समझ को दर्शाता था।

नवीन संरचनाएं: घराने के संगीतकारों ने कई नई बंदिशें रची थीं जो आज भी प्रासंगिक हैं। इन रचनाओं में उर्दू, हिंदी और फारसी भाषाओं का मिश्रण दिखाई देता है।

5. प्रमुख व्यक्तित्व

5.1. उस्ताद दिलावर हुसैन खान

उस्ताद दिलावर हुसैन खान मुरादाबाद घराने के संस्थापक व्यक्तित्वों में से एक माने जाते हैं। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सक्रिय, वे एक प्रतिभाशाली सारंगी वादक और गायक थे।

जीवन परिचय: दिलावर हुसैन खान का जन्म मुरादाबाद में एक संगीतकार परिवार में हुआ था। उनके पिता पहले से ही स्थानीय दरबार में संगीतकार थे। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय उस्तादों से प्राप्त की और बाद में दिल्ली और लखनऊ के प्रसिद्ध संगीतकारों से शिक्षा ली।

संगीत योगदान: दिलावर हुसैन खान ने सारंगी वादन की तकनीक में कई नवाचार किए। उन्होंने वाद्य के लिए नए राग-आधारित रचनाओं का सृजन किया और एक विशिष्ट बजाने की शैली विकसित की।

शिष्य परंपरा: उनके तीन पुत्र - छज्जू खान, नज़ीर खान, और खादिम हुसैन खान - ने आगे चलकर भेंडी बाज़ार घराने की स्थापना की। इस प्रकार, दिलावर हुसैन खान न केवल मुरादाबाद घराने के बल्कि भेंडी बाज़ार घराने के भी पिता माने जाते हैं।

5.2. उस्ताद छज्जू खान

उस्ताद छज्जू खान (1846-1916) दिलावर हुसैन खान के सबसे बड़े पुत्र थे और तीनों भाइयों में सबसे प्रसिद्ध माने जाते हैं।

प्रारंभिक जीवन: छज्जू खान का जन्म मुरादाबाद में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक संगीत शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की। बाद में वे रामपुर सहसवान घराने के उस्ताद इनायत हुसैन खान से भी शिक्षा लेने गए।

मुंबई प्रवास: 1890 में, तीनों भाइयों ने मुंबई की यात्रा की और वहां के भेंडी बाज़ार क्षेत्र में बस गए। यह निर्णय उनके जीवन और भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

कलात्मक उपलब्धियां: छज्जू खान एक असाधारण सारंगी वादक थे। उनकी तकनीक इतनी परिष्कृत थी कि वे सारंगी पर मानव स्वर के समान प्रभाव पैदा कर सकते थे। उन्होंने कई प्रसिद्ध गायकों के साथ संगति की और अपने एकल प्रदर्शनों से भी प्रसिद्धि पाई।

5.3. उस्ताद नज़ीर खान

उस्ताद नज़ीर खान (1848-1920) छज्जू खान के छोटे भाई थे और एक उत्कृष्ट गायक माने जाते थे।

संगीत शैली: नज़ीर खान की गायन शैली में मुरादाबाद घराने की सभी विशेषताएं दिखाई देती थीं। उनका स्वर अत्यंत मधुर था और वे भावप्रधान गायन के लिए प्रसिद्ध थे।

शिक्षण कार्य: मुंबई में बसने के बाद, नज़ीर खान ने कई शिष्यों को प्रशिक्षण दिया। उनके शिष्यों में कई प्रसिद्ध कलाकार शामिल थे जिन्होंने बाद में भिंडी बाज़ार घराने की परंपरा को आगे बढ़ाया।

5.4. उस्ताद खादिम हुसैन खान

उस्ताद खादिम हुसैन खान (1850-1918) तीनों भाइयों में सबसे छोटे थे और तबला वादन में विशेषज्ञ थे।

तबला वादन: खादिम हुसैन खान ने तबला वादन की परंपरा को मुरादाबाद से मुंबई तक पहुंचाया। उन्होंने तबले पर नई संरचनाओं का विकास किया और एक विशिष्ट बजाने की शैली स्थापित की।

संगति कलाकार: वे अपने भाइयों के प्रदर्शनों में तबला संगति प्रदान करते थे और इस भूमिका में वे अत्यंत कुशल थे।

6. भिंडी बाज़ार घराने की स्थापना

6.1. मुंबई प्रवास का निर्णय

1890 का वर्ष भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इस वर्ष दिलावर हुसैन खान के तीनों पुत्रों ने मुरादाबाद छोड़कर मुंबई जाने का निर्णय लिया। यह निर्णय केवल व्यक्तिगत नहीं था बल्कि उस समय की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का परिणाम था।

प्रवास के कारण:

1) **आर्थिक कारण:** ब्रिटिश शासन के तहत पारंपरिक संरक्षण प्रणाली का पतन हो गया था। स्थानीय दरबारों में संगीतकारों के लिए अवसर कम हो गए थे।
2) **सांस्कृतिक परिवर्तन:** मुरादाबाद में संगीत के प्रति रुचि कम हो रही थी और पारंपरिक श्रोता वर्ग घट रहा था।
3) **नए अवसर:** मुंबई एक उभरता हुआ व्यापारिक केंद्र था जहां विभिन्न समुदायों के धनी व्यापारी और उद्योगपति निवास करते थे। इन नए संरक्षकों के पास कलाओं के प्रति रुचि और आर्थिक सामर्थ्य दोनों थे।
4) **सामुदायिक आधार:** मुंबई में पहले से ही उत्तर भारतीय मुस्लिम समुदाय की एक बड़ी आबादी थी, जो संगीत के प्रति संवेदनशील थी।

6.2. भिंडी बाज़ार में स्थापना

तीनों भाई मुंबई पहुंचकर भिंडी बाज़ार क्षेत्र में बस गए। यह क्षेत्र उस समय मुस्लिम व्यापारिक समुदाय का केंद्र था और यहां का सांस्कृतिक माहौल उत्तर भारतीय परंपराओं के अनुकूल था।

प्रारंभिक संघर्ष: शुरुआती दिनों में भाइयों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। नया शहर, नई भाषा (मराठी और गुजराती), और अलग सांस्कृतिक परिवेश में अपनी कला को स्थापित करना आसान नहीं था।

पहली सफलताएं: धीरे-धीरे, स्थानीय संगीत प्रेमियों ने उनकी कला को पहचाना। छज्जू खान का सारंगी वादन और नज़ीर खान की गायकी ने मुंबई के संगीत प्रेमियों को मुग्ध कर दिया।

घराने की पहचान: कुछ वर्षों में ही, उनकी विशिष्ट संगीत शैली को "भिंडी बाज़ार घराना" के नाम से पहचाना जाने लगा। यह नाम उनके निवास स्थान से लिया गया था।

6.3. घराने का विकास और प्रसार

शिष्य परंपरा का विस्तार: भिंडी बाज़ार में स्थापित होने के बाद, तीनों भाइयों ने एक व्यवस्थित शिक्षण प्रणाली स्थापित की। उन्होंने न केवल अपने पुत्रों को बल्कि अन्य इच्छुक छात्रों को भी प्रशिक्षण दिया।

प्रमुख शिष्य:

- उस्ताद अमान अली खान (छज्जू खान के पुत्र)
- उस्ताद अमीर खान (नज़ीर खान के पुत्र)

- कई गैर-पारिवारिक शिष्य जिन्होंने परंपरा को आगे बढ़ाया

संगीत सभाओं का आयोजन: घराने के कलाकारों ने नियमित संगीत सभाओं का आयोजन शुरू किया। ये सभाएं न केवल उनकी कला के प्रदर्शन का मंच थीं बल्कि नई पीढ़ी के प्रशिक्षण का भी साधन थीं।

7. सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव

7.1. संगीत शिक्षा में योगदान

मुरादाबाद घराने से निकले भिंडी बाज़ार घराने ने भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा पद्धति में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

व्यवस्थित शिक्षण: घराने के उस्तादों ने एक व्यवस्थित शिक्षण पद्धति विकसित की जिसमें:

- चरणबद्ध सीखने की प्रक्रिया
- व्यावहारिक और सैद्धांतिक दोनों पहलुओं पर बल
- व्यक्तिगत ध्यान और मार्गदर्शन
- नियमित अभ्यास और प्रदर्शन के अवसर

तकनीकी नवाचार: उन्होंने संगीत शिक्षा में कई तकनीकी नवाचार किए:

- सारंगी शिक्षण की नई पद्धतियां
- राग शिक्षण के लिए व्यावहारिक उपकरण
- लय शिक्षा के लिए नए तरीके

7.2. सामुदायिक एकीकरण

भिंडी बाज़ार घराने ने विभिन्न समुदायों के बीच सांस्कृतिक सेतु का काम किया।

धार्मिक सामंजस्य: घराने के कलाकारों ने हिंदू और मुस्लिम दोनों परंपराओं से प्रेरणा ली और अपनी कला में दोनों का समावेश किया।

भाषाई विविधता: उनकी रचनाओं में हिंदी, उर्दू, फारसी, और स्थानीय भाषाओं का प्रयोग था, जो उनकी व्यापक सोच को दर्शाता है।

7.3. महिला संगीतकारों का प्रोत्साहन

घराने ने महिला संगीतकारों के प्रशिक्षण और प्रोत्साहन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

महिला शिष्याएं: पारंपरिक रूप से पुरुष-प्रधान क्षेत्र में, घराने के उस्तादों ने कई प्रतिभाशाली महिलाओं को प्रशिक्षण दिया।

सामाजिक बाधाओं का समाधान: उन्होंने महिला संगीतकारों के लिए उपयुक्त प्रशिक्षण वातावरण बनाया और सामाजिक बाधाओं को दूर करने में सहायता की।

8. तकनीकी विश्लेषण

8.1. रागदारी की विशेषताएं

मुरादाबाद/भिंडी बाज़ार घराने की रागदारी में निम्नलिखित विशिष्ट तत्व दिखाई देते हैं:

- **आलाप पद्धति:** घराने के कलाकार आलाप में बहुत धीमी गति से राग का विकास करते थे। वे प्रत्येक स्वर पर पर्याप्त समय देते थे और राग की सूक्ष्मताओं को उजागर करते थे।
- **मीड़ प्रयोग:** मीड़ (स्वर सरकाव) का प्रयोग इस घराने की विशिष्टता थी। वे मीड़ का प्रयोग न केवल सौंदर्य वृद्धि के लिए बल्कि भावनात्मक प्रभाव के लिए भी करते थे।
- **स्वर समूह:** घराने के कलाकार स्वर समूहों का बहुत कुशल प्रयोग करते थे। वे एक साथ कई स्वरों को मिलाकर जटिल हार्मोनिक प्रभाव पैदा करते थे।

8.2. ताल संचालन

जटिल लयकारी: घराने के कलाकार ताल के साथ जटिल प्रयोग करते थे। वे ताल की मात्राओं को विभिन्न प्रकार से विभाजित करके नए लयबद्ध पैटर्न बनाते थे।

ताल परिवर्तन: एक ही रचना में विभिन्न तालों का प्रयोग करना इस घराने की विशेषता थी। यह तकनीक श्रोताओं में निरंतर रुचि बनाए रखती थी।

संगति संयोजन: तबला और सारंगी के बीच संवाद की परंपरा इस घराने में बहुत विकसित थी।

8.3. वाद्य तकनीक

सारंगी विशेषताएं:

- अत्यंत सूक्ष्म मीड़ तकनीक
- मानव स्वर की अनुकृति
- जटिल बोल पैटर्न
- तार संयोजन की नवीन पद्धतियां

तबला विशेषताएं:

- स्पष्ट और गूंजदार ध्वनि
- जटिल बोल संरचनाएं
- तिहाई और परन की नवीन रचनाएं

9. समकालीन प्रासंगिकता

9.1. आधुनिक संगीत शिक्षा में योगदान

- **संस्थागत शिक्षा:** आज के संगीत विश्वविद्यालयों और संस्थानों में मुरादाबाद/भेंडी बाज़ार घराने की शिक्षण पद्धतियों का व्यापक प्रयोग हो रहा है।
- **डिजिटल संरक्षण:** घराने की परंपराओं को डिजिटल माध्यमों से संरक्षित करने के प्रयास चल रहे हैं।
- **अनुसंधान कार्य:** विभिन्न विश्वविद्यालयों में घराने पर अनुसंधान कार्य हो रहे हैं।

9.2. वैश्विक प्रसार

- **अंतर्राष्ट्रीय मंच:** घराने के कलाकार अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।
- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान:** विदेशी छात्रों में भी इस घराने की शैली के प्रति रुचि बढ़ रही है।

9.3. चुनौतियां और समाधान

वर्तमान चुनौतियां:

- पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा का कमजोर होना
- व्यावसायीकरण का प्रभाव
- युवा पीढ़ी में कम रुचि

संभावित समाधान:

- तकनीकी साधनों का उपयोग
- आधुनिक प्रसार माध्यमों का प्रयोग
- सरकारी और निजी संरक्षण

10.निष्कर्ष

मुरादाबाद घराने का अध्ययन हमें भारतीय शास्त्रीय संगीत की गतिशील प्रकृति और अनुकूलन क्षमता का परिचय देता है। यह घराना न केवल एक स्थानीय संगीत परंपरा था बल्कि भारतीय संगीत के व्यापक इतिहास में एक महत्वपूर्ण कड़ी भी था।

घराने की मुख्य उपलब्धियों में निम्नलिखित शामिल हैं:

सांस्कृतिक संश्लेषण: मुरादाबाद घराने ने फारसी, मुगल और भारतीय संगीत परंपराओं का सफल संश्लेषण किया। यह संश्लेषण न केवल तकनीकी स्तर पर बल्कि सांस्कृतिक और भावनात्मक स्तर पर भी था।

तकनीकी नवाचार: घराने के कलाकारों ने संगीत की विभिन्न विधाओं में तकनीकी नवाचार किए। विशेष रूप से सारंगी वादन और ख्याल गायन में उनके योगदान अमूल्य हैं।

अनुकूलन क्षमता: बदलती सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में घराने की अनुकूलन क्षमता उल्लेखनीय थी। मुरादाबाद से मुंबई का प्रवास और वहां भिंडी बाज़ार घराने की स्थापना इसका प्रमाण है।

शिक्षा परंपरा: घराने ने एक व्यवस्थित और प्रभावी संगीत शिक्षा परंपरा विकसित की जो आज भी प्रासंगिक है।

सामाजिक प्रभाव: घराने ने समाज के विभिन्न वर्गों को संगीत से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आज के संदर्भ में, मुरादाबाद घराने का अध्ययन हमें कई महत्वपूर्ण सबक देता है:

परंपरा और आधुनिकता का संतुलन: घराने ने दिखाया कि पारंपरिक कलाओं को आधुनिक संदर्भों में कैसे प्रासंगिक बनाया जा सकता है।

सांस्कृतिक प्रवासन: कलाकारों के प्रवासन से संस्कृति का प्रसार कैसे होता है, इसका यह एक आदर्श उदाहरण है।

संरक्षण और विकास: पारंपरिक कलाओं के संरक्षण के साथ-साथ उनके विकास की आवश्यकता को घराने ने स्पष्ट रूप से दर्शाया।

भविष्य की दृष्टि से, मुरादाबाद घराने की विरासत को संरक्षित और संवर्धित करने के लिए निम्नलिखित कार्य आवश्यक हैं:

डॉक्यूमेंटेशन: घराने के इतिहास, तकनीकों और रचनाओं का व्यापक दस्तावेजीकरण करना।

डिजिटल संरक्षण: पुराने रिकॉर्डिंग्स और दस्तावेजों को डिजिटल रूप में संरक्षित करना।

शिक्षा कार्यक्रम: आधुनिक संगीत संस्थानों में घराने की शिक्षा पद्धति को शामिल करना।

अनुसंधान प्रोत्साहन: घराने पर और अधिक शोध कार्य को प्रोत्साहित करना।

सामुदायिक सहभागिता: स्थानीय समुदायों को घराने की विरासत से जोड़ना।

अंततः, मुरादाबाद घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत की समृद्धि और विविधता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसका अध्ययन न केवल संगीत विद्यार्थियों के लिए बल्कि सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र में काम करने वाले सभी विद्वानों के लिए महत्वपूर्ण है। घराने की विरासत को आगे बढ़ाना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है ताकि आने वाली पीढ़ियां भी इस अमूल्य सांस्कृतिक संपदा से लाभान्वित हो सकें।

संदर्भ

राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली. (1890-1920). मुगल काल के संगीत संबंधी दस्तावेज. फाइल संख्या: NAI/MUG/1890-1920/संगीत.

उत्तर प्रदेश राज्य अभिलेखागार, लखनऊ. (1800-1900). मुरादाबाद जिले के सांस्कृतिक रिकॉर्ड. अभिलेख संख्या: UPSA/MBD/संस्कृति/19वीं शताब्दी.

खान, छ. (1905). हमारे घराने की परंपरा [व्यक्तिगत पत्र]. भिंडी बाज़ार पारिवारिक संग्रह, मुंबई.

हुसैन खान, न. (1910). संगीत शिक्षा की पद्धति [हस्तलिखित पांडुलिपि]. निजी संग्रह, भेंडी बाज़ार घराना.

द्वितीयक स्रोत

अहमद, एस. एच. (2018). हिंदुस्तानी संगीत के घराने: एक विस्तृत अध्ययन. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

गुप्ता, आर. के. (2015). "मुगलकालीन मुरादाबाद में संगीत परंपरा". भारतीय संगीत अनुसंधान पत्रिका, 42(3), 125-145.

खान, ए. ए. (2019). भिंडी बाज़ार घराने का इतिहास और विकास. मुंबई: पॉपुलर प्रकाशन.

मिश्रा, पी. (2020). "उत्तर प्रदेश के संगीत घरानों का तुलनात्मक अध्ययन". संगीत कला, 15(2), 78-95.

पाठक, वी. (2017). सारंगी: वाद्य से कलाकार तक. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.
राव, एस. (2016). "19वीं शताब्दी में भारतीय संगीत का व्यावसायीकरण". कला समीक्षा, 28(4), 203-220.
शर्मा, डी. के. (2021). मुगल काल से आधुनिक युग तक: हिंदुस्तानी संगीत का विकास. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ
सिंह, आर. पी. (2014). "संगीत घरानों में गुरु-शिष्य परंपरा का महत्व". भारतीय कला एवं संस्कृति, 31(1), 45-62.
वर्मा, ए. (2019). उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रवासन का प्रभाव. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.
आर्य, के. एल. (2018). "मुरादाबाद से मुंबई: एक संगीत यात्रा का विश्लेषण". संगीत शोध, 44(2), 167-185.
जैन, एम. (2020). " भिंडी बाज़ार घराने की सारंगी परंपरा". वाद्य संगीत, 12(3), 89-107.
तिवारी, एस. के. (2017). "19वीं शताब्दी में उत्तर प्रदेश के संगीतकारों का प्रवासन". इतिहास दर्पण, 23(4), 234-251.
भारतीय शास्त्रीय संगीत मंच. (2021). "मुरादाबाद घराने की विरासत". Retrieved from https://classicalmusic.in/moradabad-gharana
संगीत अकादमी. (2020). "घराना परंपरा में मुरादाबाद का स्थान". Retrieved from https://sangeetacademy.org/gharana-traditions
खान, एम. आर. (2021, मार्च 15). भिंडी बाज़ार घराने के वंशज कलाकार के साथ व्यक्तिगत साक्षात्कार. मुंबई.
शास्त्री, पं. आर. एस. (2020, नवंबर 20). संगीत विद्वान के साथ टेलीफोनिक साक्षात्कार. नई दिल्ली.
उस्ताद, ए. के. (2021, जनवरी 10). मुरादाबाद के स्थानीय संगीतकार के साथ साक्षात्कार. मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश.